इकाई 17 ट्रेड यूनियन और किसान आन्दोलन का विकास*

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 श्रमिकों की दशा

17.3 ट्रेड यूनियनवाद का उदय

17.3.1 ट्रेड यूनियनवाद का अर्थ

17.3.2 आरंभिक इतिहास

17.3.3 ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना

17.4 ट्रेड यूनियनों का विकास

17.5 ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में विभाजन

17.6 नया चरण

17.7 किसानों की कठिनाइयाँ

17.8 1920 के दशक के दौरान किसान आन्दोलन

17.9 1930 के दशक में किसान आन्दोलन

17.10 ऑल इंडिया किसान सभा की स्थापना

17.11 कांग्रेस और किसान वर्ग

17.12 सारांश

17.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपके सामने 1920 और 1930 के दशकों के दौरान भारत में ''ट्रेड यूनियन और किसान आन्दोलन'' के विकास का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- श्रमिकों की दशा के बारे में जान सकेंगे;
- ट्रेड यूनियनवाद का अर्थ, इसका आरंभिक इतिहास और आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना के विषय में बता सकेंगे;
- ट्रेड यूनियन आन्दोलन के विकास की प्रक्रिया और बाद में उनके बीच हुए विभाजन के विषय में जान सकेंगे;
- किसानों की कठिनाइयों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- यह व्याख्या कर सकेंगे कि किसान आन्दोलन किस प्रकार देश के विभिन्न भागों में उभरे और किस प्रकार वे किसान सभा में संगठित हुए।

17.1 प्रस्तावना

इस इकाई के अन्तर्गत हम आपको 1920 और 1930 के दशकों के दौरान हुए ट्रेड यूनियन और किसान आन्दोलनों के विकास के विषय में बतायेंगे। पहले हम ट्रेड यूनियन

* यह इकाई ई.एच.आई.-01 की इकाई 28 पर आधारित है।

आन्दोलन पर और उसके बाद किसान आन्दोलन पर विचार करेंगे। आप पढ़ चुके हैं कि किस प्रकार 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में औपनिवेशिक सरकार, जमींदार और मिल मालिकों के शोषण और उत्पीड़न के कारण किसानों और मजदूरों ने आन्दोलन किए। आप अब समझ सकेंगे कि 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में किस प्रकार इन आन्दोलनों ने धीरे-धीरे संगठित रूप धारण किया और औपनिवेशिक साम्राज्य पर अपनी नीतियाँ बदलने के लिए दबाव डाला। इस काल के श्रमिक वर्ग की प्रकृति और किसान आन्दोलनों में हुए इन परिवर्तनों को समझने के लिए आपको कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए :

- राष्ट्रीय आन्दोलन में नयी प्रवृत्तियों का उभरना – विशेषकर जन-राजनीति और जन-संगठनों की तरफ झुकाव,
- प्रथम विश्वयुद्ध के आर्थिक, सामाजिक परिणाम, जिन्होंने भारतीयों के विभिन्न वर्गों पर विपरीत प्रभाव डाला, और
- बोल्शेविक रूस का प्रभाव और भारत में समाजवादी विचारों का विकास।

इन सभी कारणों से भारत में श्रमिक वर्ग और किसान आन्दोलनों का विकास हुआ। इन आन्दोलनों की प्रकृति पुराने आन्दोलनों से भिन्न थी।

17.2 श्रमिकों की दशा

अब हम संक्षेप में श्रमिकों की दशा का वर्णन करेंगे। इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि भारत में ट्रेड यूनियनों की स्थापना क्यों हुई। भारत में सूती वस्त्र उद्योग का मुख्य केन्द्र बम्बई तथा जूट और चाय का मुख्य केन्द्र बंगाल था। यहाँ श्रमिकों की जनसंख्या भारत में सबसे अधिक थी। श्रमिकों के रहने और कार्य करने की परिस्थितियाँ बहुत शोचनीय थीं। वे एक दिन में 15–16 घंटे से लेकर 18 घंटे तक काम करते थे। अवकाश की कोई व्यवस्था नहीं थी। श्रमिकों को ठेकेदारों (सरदार) को रिश्वत देनी पड़ती थी, जिन पर उनकी आजीविका निर्भर करती थी। वे अंधेरी और अस्वास्थ्यकर बस्तियों में रहते थे। जहाँ पानी और सफाई की कोई व्यवस्था नहीं थी।

कोयला खानों के मजदूरों की दशा और भी अधिक शोचनीय थी। झरिया और गिरिडिह की कोयला खानों के श्रमिकों के काम के घंटे प्रातः 6 बजे से सांय 9 बजे तक थे। स्त्रियाँ और बच्चे भूमिगत खानों में काम करते थे। वहाँ प्रायः दुर्घटनाएँ हुआ करती थी। 1923 के बाद ही सरकार ने दुर्घटना बीमा योजना शुरू की थी। इसके बाद भी श्रमिकों को दुर्घटनाओं के मुआवजे की रकम लेने के लिए भी परेशानी उठानी पड़ती थी। श्रमिकों को मजदूरी कम दी जाती थी, जिससे मालिकों को अधिक से अधिक लाभ हो सके। रॉयल कमीशन आन लेवर ने स्पष्ट किया कि म्रदास और कानपुर में मजदूरी सबसे कम और बम्बई में सबसे ज्यादा थी। श्रमिकों द्वारा नुकसान करने, देर से आने और कम उत्पादन के लिए कई सालों तक जुर्माना वसूल किया जाता था। श्रमिक ऋणग्रस्त रहते थे। उन्हें प्रायः काबुली महाजनों का सहारा लेना पड़ता था। वे महाजन ब्याज की ऊँची दरें वसूल करते थे। भविष्य निधि और पेंशन की कोई व्यवस्था नहीं थी। वृद्ध होने पर श्रमिकों को काम से हाथ धोना पड़ता था। अतः उन्हें अपने भरण-पोषण (जीवन-निर्वाह) के लिए अपने बच्चों या रिश्तेदारों पर निर्भर रहना पड़ता था।

बोध प्रश्न 1

अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखिए।

1) श्रमिकों की शोचनीय दशा के विषय में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) नीचे दिए गए प्रत्येक वाक्य का उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

क) बम्बई भारत के जूट उद्योग का मुख्य केन्द्र था।

ख) कलकत्ता और बम्बई में श्रमिकों की जनसंख्या सबसे अधिक थी।

ग) श्रमिकों को प्रत्येक दिन 15 से 16 घंटे काम करना पड़ता था।

घ) रॉयल कमीशन आन लेबर की नियुक्ति श्रमिकों की दशा की जाँच-पड़ताल करने के लिए हुई थी।

ड़) श्रमिकों को हड़ताल करने का अधिकार था।

च) श्रमिकों के लिए वृद्धावस्था-पेंशन की व्यवस्था थी।

17.3 ट्रेड यूनियनवाद का उदय

आइए देखें कि शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिए श्रमिक किस प्रकार संगठित हुए। वास्तव में ट्रेड यूनियनवाद का उदय श्रमिक वर्ग के आन्दोलन में एक नये युग का प्रतीक था।

17.3.1 ट्रेड यूनियनवाद का अर्थ

ट्रेड यूनियनें जो आज बहुत प्रचलित हैं, श्रमिकों की ऐसी संस्थाएँ हैं जिनका उद्देश्य फैक्टरियों में काम करने वाले श्रमिकों की दशा सुधारना है। 19वीं शताब्दी में भारत में फैक्टरियों और मिलों की स्थापना होने पर सैकड़ों की संख्या में श्रमिक प्रतिदिन इकट्ठे काम करने लगे और रोज मिलने लगे। इससे उन्हें अपनी समस्याओं की चर्चा करने और अपने विचार मालिकों के सामने रखने का अवसर मिला। अधिकांश श्रमिक अशिक्षित थे। आरम्भ में उनका ट्रेड यूनियन बनाने और स्वयं को संगठित करने का विचार नहीं था। अधिकतर बुद्धिजीवियों ने उन्हें शिक्षित किया और ट्रेड यूनियनों में संगठित किया। ये लोग प्रायः यूनियनों के नेता होते थे।

17.3.2 आरंभिक इतिहास

जैसा हम पहले बता चुके हैं, कुछ व्यक्ति श्रमिकों की शोचनीय दशा देखकर उनकी काम करने की परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए आगे आए। उदाहरणस्वरूप, ब्रह्म समाज के एक आमूल पविर्तनवादी (Radical Brahmo) शशिपाद बनर्जी ने कार्यरत व्यक्तियों का क्लब बनाया। उन्होंने 1874 में ''भारत श्रमजीवी'' (भारतीय श्रमिक) नामक अखबार प्रकाशित किया और जूट मिल के श्रमिकों में शिक्षा का प्रसार करने के लिए रात्रिकालीन स्कूलों की व्यवस्था की। लेकिन उन्होंने ट्रेड यूनियन की स्थापना नहीं की। इसी प्रकार बम्बई में एन. एम. लोंखडे ने 1880 में 'दीनबन्धु' नामक साप्ताहिक पत्रिका आरंभ की तथा 1890 में 'बम्बई मिल हेंड्स एसोसिएशन' की भी स्थापना की। यद्यपि यह संस्था ट्रेड यूनियन नहीं थी, फिर भी इसने निम्नलिखित माँगे पेश कीं।

- काम के घंटों में कमी,
- साप्ताहिक अवकाश, और
- फैक्टरियों में काम के दौरान घायल हुए श्रमिकों को मुआवजा।

अप्रैल 1918 में ऐनी बेसेन्ट के निकट सहयोगी बी. पी. वाडिया ने 'मद्रास लेबर यूनियन' की स्थापना की। यह भारत की पहली ट्रेड यूनियन थी। 1918 में मोहन दास करमचन्द गांधी ने अहमदाबाद के सूती कपड़ा उद्योग में श्रमिकों की हड़ताल का नेतृत्व किया। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा ''दी स्टोरी ऑफ माइ एक्सपेरीमेंट्स विद ट्रुथ'' (The Story of My Experiments With Truth) में श्रमिकों की दशा का उल्लेख करते हुए लिखा है कि ''उनकी मजदूरी कम थी और इसमें वृद्धि के लिए श्रमिक बहुत समय से संघर्ष कर रहे थे।''

गांधी जी ने मिल मालिकों से अनुरोध किया कि वे मामले मध्यस्थता के लिए भेज दें। परन्तु मिल मालिकों ने इन्कार कर दिया। तब गांधी जी ने श्रमिकों को हड़ताल करने की सलाह दी। हड़ताल 21 दिन तक जारी रही। गांधी जी ने उपवास शुरू किया लेकिन तीन दिन बाद ही समझौता हो गया। 1920 में गांधी जी ने 'मजूर महाजन संघ' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य श्रमिकों और उनके मालिकों के बीच शांतिपूर्ण संबंध बनाए रखना और मध्यस्थता तथा समाज सेवा करना था।

17.3.3 ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना

ऊपर बताए गए प्रयत्नों से ट्रेड यूनियनवाद धीरे-धीरे लोकप्रिय होने लगा। 1919-1920 में कानपुर, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, जमशेदपुर और अहमदाबाद जैसे औद्योगिक केन्द्रों में अनेकों हड़तालें हुई। हजारों श्रमिकों ने इन हड़तालों में भाग लिया। इस पृष्ठभूमि में 1920 में बम्बई में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना हुई। लाला लाजपतराय ने इसके उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। इसमें मोतीलाल नेहरू, ऐनी बेसेन्ट, सी. एफ. एंड्रयूज, बी. पी. वाडिया और एन. एम. जोशी जैसे प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं और ट्रेड यूनियनवादियों ने भाग लिया। दी ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस भारतीय श्रमिकों का प्रधान संगठन था।

यद्यपि 1920 के दशक में कई बार हड़तालें होती रहती थीं परन्तु श्रमिकों के बीच ट्रेड यूनियनवाद के विकास की गति धीमी थी। रॉयल कमीशन आन लेबर ने इसके दो कारण बताए :

i) भाषा और साम्प्रदायिक भिन्नता ऐसे कारक थे, जो श्रमिकों की एकता में बाधक थे। उदाहरण के लिए, बंगाल जूट मिल में अधिकतर श्रमिक बिहार और यू.पी. (संयुक्त प्रान्त) से आए थे। बंगाली श्रमिकों की संख्या कम थी।

ii) ठेकेदारों तथा मालिकों ने ट्रेड यूनियनों के विकास का विरोध किया।

iii) 1929 में केवल 51 यूनियनें थीं। 190,436 सदस्य ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस से संबद्ध थे। लेकिन अभी भी बहुत में श्रमिक ट्रेड यूनियनों से संगठित नहीं थे क्योंकि उन्हें नौकरी से निकाले जाने का डर था।

बोध प्रश्न 2

1) ट्रेड यूनियन क्या है?

.....

.....

.....

.....

2) क्या ट्रेड यूनियन श्रमिकों के लिए लाभदायक है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) श्रमिकों की दशा सुधारने के लिए किए गए आरंभिक प्रयासों के विषय में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना कैसे हुई?

.....

.....

.....

.....

.....

17.4 ट्रेड यूनियनों का विकास

इन सभी रुकावटों के बावजूद ट्रेड यूनियन आन्दोलन श्रमिकों के बीच लोकप्रियता प्राप्त कर रहा था। इसका मुख्य कारण श्रमिकों की अनेक तकलीफें थीं, जैसे काम के अत्यधिक घंटे, अस्वास्थ्यकर आवास व्यवस्था, अपर्याप्त मजदूरी, नौकरी से निकाला जाना आदि। उन्होंने सहायता के लिए ''बाहरी व्यक्तियों'' का सहारा लिया। ये बाहरी व्यक्ति राष्ट्रवादी, कम्युनिस्ट और समाजवादी तथा कुछ निर्दलीय भी होते थे। ये बाहरी व्यक्ति श्रमिकों की सभाएँ आयोजित करते थे, मालिकों को सम्बोधित कर याचिकाएँ लिखते थे और माँग-पत्र तैयार करते थे। वे श्रमिकों को ट्रेड यूनियनों में संगठित करते थे तथा ये ट्रेड यूनियनें ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस से सम्बद्ध थीं। जब मालिक उनकी माँगें अस्वीकार कर देते थे, तब श्रमिक हड़ताल करते थे। प्रायः हड़ताल के दौरान ट्रेड यूनियनें श्रमिकों की आर्थिक सहायता करती थीं क्योंकि हड़ताल के दौरान श्रमिकों को मजूदरी नहीं मिलती थी। हड़तालों के कारण श्रमिकों को बहुत अधिक परेशानियाँ उठानी पड़ती थीं। विशेषकर जब ये हड़तालें महीनों तक चलती थीं। इन परेशानियों के बावजूद भी फैक्टरियों में अनेक हड़तालें हुई। सरकारी कार्यालयों और व्यापारिक फर्मों के कर्मचारियों ने भी ट्रेड यूनियनें बनायीं और हड़तालें आयोजित की।

भारत में बम्बई सूती कपड़ा मिलों का सबसे बड़ा केन्द्र था। इनमें से अधिकांश मिलें भारतीय पूँजीपतियों द्वारा स्थापित की गयी थीं। 1924 में बम्बई में 150,000 श्रमिकों की एक बड़ी हड़ताल हुई। हड़ताल का मुख्य कारण मजदूरों को पिछले चार वर्षों से मिलने

वाला बोनस इस वर्ष नहीं दिया जाना था। 1926 में एन. एम. जोशी की अध्यक्षता में 'टैक्सटाइल लेबर यूनियन' की स्थापना की गयी। अप्रैल 1928 में बम्बई में एक आम हड़ताल हुई। अधिकांश मिलों के श्रमिकों ने इस हड़ताल में भाग लिया। जब सरकार ने श्रमिकों की माँगों पर विचार करने के लिए एक समिति नियुक्त की तब 9 अक्टूबर को हड़ताल समाप्त हो गयी। इस प्रकार हड़ताल ने सरकार को श्रमिकों और मालिकों के बीच हुए झगड़े में हस्तक्षेप करने के लिए बाध्य किया।

बंगाल की जूट मिलों पर अंग्रेज पूँजीपतियों का अधिकार था। यह बंगाल का सबसे बड़ा उद्योग था। बंगाल में 1921-29 के दौरान 592 औद्योगिक विवाद हुए। इनमें से 236 जूट मिलों में हुए। 1928 में हावड़ा जिले के बाउरिया में फोर्ट ग्लोस्टर मिल के श्रमिकों ने हड़ताल कर दी। यह हड़ताल बहुत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि यह 17 जुलाई से 31 दिसम्बर तक यानी लगभग 6 महीने चली।

जुलाई 1929 में जूट मिलों में एक आम हड़ताल हुई। बंगाल कांग्रेस ने हड़ताल के प्रति सहानुभूति दिखायी। सरकार ने हस्तक्षेप किया और 16 अगस्त को हड़ताल समाप्त हो गयी।

जमशेद जी टाटा ने भारत में जमशेदपुर में पहली आधुनिक स्टील फैक्टरी स्थापित की। लगभग 20 हजार श्रमिक इस फैक्टरी में काम करते थे। 1920 में श्रमिकों ने ''लेबर एसोसिएशन'' की स्थापना की। बड़ी संख्या में श्रमिकों के निकाले जाने के विरोध में टाटा स्टील फैक्टरी के श्रमिकों ने 1928 में एक आम हड़ताल की। यह हड़ताल 6 महीने से ज्यादा चलीं। यद्यपि हड़ताल पूरी तरह सफल नहीं थी परन्तु मालिकों ने ''लेबर एसोसिएशन' को मान्यता दे दी।

इस काल के दौरान अहमदाबाद में मिल मालिकों द्वारा मजदूरी में 20 प्रतिशत कटौती किए जाने के विरोध में 64 कपड़ा मिलों में से 56 में आम हड़ताल हुई। मद्रास शहर भी ट्रेड यूनियन आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। मद्रास में 1923 में सिंगारावेलू ने पहला ''मई दिवस'' मनाया।

17.5 ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में विभाजन

अमेरिका में भीषण आर्थिक मंदी आरम्भ हुई और 1929 तक यह पूरे विश्व में फैल गयी। भारत में मंदी 1936 तक जारी रही। सैकड़ों फैक्टरियाँ बंद हो गयीं और हजारों श्रमिक रोजगार से हाथ धो बैठे। यूनियनों की संख्या में भी कमी हुई।

दुर्भाग्यवश इस काल के दौरान ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस दो भागों में विभाजित हो गयी। पहला विभाजन 1929 में हुआ। उस समय जवाहरलाल नेहरू ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष थे। इसका मुख्य मुद्दा था कि ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस अंग्रेज सरकार द्वारा नियुक्त रायल कमीशन आन लेबर का बहिष्कार करेगी या नहीं। उदारवादी इसमें शामिल होना चाहते थे, जबकि आमूल परिवर्तनकारी इसका बहिष्कार करना चाहते थे। अंत में उदारवादियों ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस छोड़ दी और वी. वी. गिरि की अध्यक्षता में इंडियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन की स्थापना की। 1931 में दूसरा विभाजन हुआ। कम्युनिस्टों ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस को छोड़ दिया और रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की। यह विभाजन उस समय हुआ जब मालिकों ने हजारों श्रमिकों को नौकरी से निकाल दिया था। विभाजनों के कारण ट्रेड यूनियन आन्दोलन कमजोर पड़ गया।

17.6 नया चरण

1935 के पश्चात् ट्रेड यूनियन आंदोलन का एक नया चरण आरंभ हुआ। ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में पुनः एकता स्थापित हुई। 1936 के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में

सुधार आया। 1937 में कांग्रेस ने प्रान्तों में मंत्रिमंडलों की स्थापना की। कांग्रेस मंत्रिमंडलों की स्थापना से श्रमिकों की आकांक्षाएँ बढ़ीं। 1936 और 1939 के बीच ट्रेड यूनियनों की संख्या दुगुनी हो गयी और इसके सदस्यों की संख्या भी काफी बढ़ गयी। हड़तालों की संख्या 1936 में 157 से 1939 में 406 हो गयी। इनमें से प्रमुख हड़तालें 1935 में कलकत्ता में केसोराम कॉटन मिल्स और अहमदाबाद में टेक्सटाइल्स मिलों में, दिसम्बर 1936 से फरवरी 1937 तक बंगाल नागपुर रेलवे में हुई। इसके अलावा 1936 के दौरान कलकत्ता जूट मिल्स और कानपुर टैक्सटाइल्स मिल्स में श्रमिकों तथा मालिकों के बीच अनेक झगड़े हुए जो आगामी वर्ष में पराकाष्ठा पर पहुँच गए तथा दोनों में व्यापक आम हड़तालें हुईं। इस समय की महत्वपूर्ण घटना वामपंथियों और समाजवादियों द्वारा ट्रेड यूनियनों और किसान संगठनों को सामूहिक आन्दोलन के लिए एकताबद्ध करना था। दरअसल इस चरण में ही ट्रेड यूनियन आंदोलन का विकास हुआ।

बोध प्रश्न 3

1) ट्रेड यूनियन आन्दोलन श्रमिकों में लोकप्रिय क्यों हुआ? बाहरी व्यक्तियों ने श्रमिकों की किस प्रकार सहायता की?

.....

.....

.....

.....

.....

2) श्रमिकों पर आर्थिक मंदी का क्या प्रभाव पड़ा?

.....

.....

.....

.....

.....

3) 1937 के बाद ट्रेड यूनियन आन्दोलन के विकास का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

17.7 किसानों की कठिनाइयाँ

1920 और 1930 के दशकों के दौरान भारत के विभिन्न भागों में अनेक किसान संघर्ष हुए। आप पढ़ चुके है कि औपनिवेशिक शासन की स्थापना से किस प्रकार भारतीय कृषक वर्ग बुरी तरह से प्रभावित हुआ और उन्होंने इस शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई। इस भाग में हम पढ़ेंगे कि किस प्रकार बदले हुए हालात भी किसानों का शोषण समाप्त नहीं कर पाए। वरन् यह वैसा ही बना रहा। लेकिन किसानों ने अपने अनुभव से यह सीखा कि उन्हें सरकार और जमींदारों की शक्ति के विरुद्ध असंगठित

नहीं रहना चाहिए। एक ओर 20वीं शताब्दी में किसानों ने न केवल ताल्लुकेदारी और जमींदारी व्यवस्था की ज्यादती के विरुद्ध विद्रोह किया, बल्कि किसान सभाओं जैसे किसान संगठनों की भी स्थापना की।

भारत के विभिन्न भागों में शोषण के तरीकों में कुछ विभिन्नताएँ हो सकती हैं। परन्तु सामान्यतः भारत में किसानों को अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी। वे सदा दूसरों की दया पर निर्भर रहते थे। यहाँ हम किसानों की कुछ प्रमुख कठिनाइयों का वर्णन करेंगे। इससे आप उस समय के किसानों की वास्तविक दशा को समझ सकेंगे।

- बहुत से क्षेत्रों में किसान का अपनी जोती हुई जमीन पर कोई दखल अधिकार (Occupancy Right) नहीं था। जमींदार को उन्हें बेदखल करने का अधिकार था, जिसका प्रयोग वे काश्तकारों को सताने के लिए करते थे।
- नियमित कर देने के अतिरिक्त जमींदार काश्तकारों को ''नजराना'', ''अबवाब'' और विशेष अवसरों पर अन्य उपहार देने के लिए बाध्य करते थे।
- भू-राजस्व के भारी दबाव के कारण किसान गाँव के व्यापारियों और जमींदारों के ऋणी हो जाते थे। ये किसानों से भारी ब्याज की दर वसूल करते थे। किसान के लिए इस ऋण जाल से बाहर निकलना कठिन था। यह ऋण पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलता रहता था।
- प्रथम विश्वयुद्ध ने किसानों की तकलीफों को और भी बढ़ा दिया। क्योंकि अनेक क्षेत्रों में किसानों को युद्ध कोष तथा सैनिक कार्यवाहियों के लिए पैसा देना पड़ता था।
- इस काल में अनाज की कीमतों में भारी वृद्धि हुई। इस मंहगाई से गरीबों को लाभ नहीं हुआ परंतु मध्यम वर्ग और व्यापारियों को इससे लाभ हुआ।

इस परिस्थिति में सरकार का कर्तव्य किसानों की सहायता करना था। परन्तु सरकार स्वयं जमींदारों के पक्ष में थी। इसका कारण यह था कि देहात में सरकारी शासन की स्थिरता जमींदारों पर निर्भर थी। अतः अनेक कष्टों के कारण किसानों ने विद्रोहों द्वारा अपनी मुक्ति का मार्ग चुना।

बोध प्रश्न 4

1) किसानों की मुख्य परेशानियाँ क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही या गलत है, सही पर (✓) और गलत पर (✗) का चिह्न लगाइए।

   i) इस काल में पहली बार किसानों ने किसान सभाओं में अपने आपको संगठित किया।

   ii) जमींदारों को काश्तकारों द्वारा जोती जा रही जमीन से उन्हें बेदखल करने का अधिकार नहीं था।

   iii) किसान अपनी इच्छा से ''अबवाब'' देते थे। वे इसे देने के लिए बाध्य नहीं थे।

iv) अनाज की कीमतों में वृद्धि से गरीब किसानों को लाभ हुआ।

v) किसानों की तकलीफों के प्रति सरकार का रुख अत्यधिक सहानुभूतिपूर्ण था।

17.8 1920 के दशक के दौरान किसान आन्दोलन

इस पृष्ठभूमि में अब हम 1920 के दशक के दौरान हुए कुछ महत्वपूर्ण किसान आन्दोलनों की चर्चा करेंगे। इस काल में किसान आन्दोलन का मजबूत केन्द्र यू. पी. था। उत्पीड़क ताल्लुकेदारी और जमींदारी व्यवस्था ने किसानों का जीना दूभर कर दिया था। राष्ट्रवादियों ने किसानों की समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया। लेकिन बाबा रामचन्द्र ने जमींदारों के विरुद्ध अवध के किसानों को संगठित करने के लिए पहल की। बाबा रामचन्द्र महाराष्ट्र के एक ब्राह्मण परिवार से थे। वे 1905 में करारबद्ध श्रमिक के रूप में फिजी गए थे। वहाँ से वे 1917-18 में अवध लौट आए। संन्यासी की वेशभूषा में वे किसानों के बीच रहे। उन्होंने गाँव में सभाएँ आयोजित कीं और गाँव में किसानों को जागृत और संगठित करने के लिए *रामचरितमानस* का उपयोग किया। उन्होंने किसानों को बतलाया कि किस प्रकार सरकार और ताल्लुकेदारों ने उन्हें बंधुआ मजदूर बना दिया है। दासता को तभी समाप्त किया जा सकता है, जब वे एकताबद्ध होकर अपना संगठित दल बना लें। अगस्त, 1920 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तब असंख्य किसानों ने कचहरी-प्रांगण में एकत्रित होकर उनकी रिहाई की माँग की।

1920 में किसान आन्दोलन कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन से जुड़ गया। 1921 में किसान आंदोलन तीव्र हो उठा और यू. पी. के रायबरेली फैजाबाद और सुल्तानपुर में फैल गया। किसानों ने प्रदर्शन किए। उनकी माँग थी कि जमीन से बेदखली रोकी जानी चाहिए। उन्होंने जमींदारों और महाजनों के घरों पर धावे बोले। 6 जनवरी, 1921 में किसान फुरसतगंज बाजार में इकट्ठे हुए। उन्होंने अनाज और कपड़े की कीमत में वृद्धि, बनियों के भारी मुनाफे और ताल्लुकेदारों की मनमानी (निरंकुशता) के विरुद्ध विद्रोह किया। पुलिस किसानों को तितर-बितर करने में असफल रही और उन पर गोली चलायी। इस कार्रवाई में 6 व्यक्ति मारे गए। 7 जनवरी को जब हजारों किसान रायबरेली में मुंशीगंज पुल पर इकट्ठे हुए उस समय पुलिस ने निहत्थे किसानों पर गोली चलायी। नेहरू जी ने अपनी आत्मकथा में इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है –

''जैसे ही मैं नदी के पास पहुँचा, दूसरी ओर से गोली चलने की आवाज सुनी जा सकती थी। मुझे पुल पर रोक लिया गया ..... इस गोलीकांड में कई लोग मारे गए थे''।

1921 में स्थिति में परिवर्तन हुआ। सरकार की दमनकारी नीति, कांग्रेसियों के आन्दोलन को रोकने के प्रयास और 1921 में अवध लगान एक्ट (Oudh Rent Act) में सुधार के कारण आंदोलन फीका पड़ गया। परन्तु इससे किसानों को शांत नहीं किया जा सका। 1921 के अंत और 1922 के आरंभ में हरदोई, बाराबंकी, सीतापुर आदि जिलों में आन्दोलन फिर से उभरा। इन जिलों में किसानों ने ''एका'' आन्दोलन आरम्भ किया। इसे शुरू करने में जुझारू (Radical) किसान नेता मदारी पासी का हाथ था। उनके नेतृत्व में शुरू किए गए आन्दोलन ने जमींदारों और प्रशासन को गंभीर चुनौती दी। तथापि अंग्रेज सरकार की दमनकारी नीति के कारण यह आन्दोलन असफल हो गया। परन्तु मदारी पासी को गिरफ्तार नहीं किया जा सका।

उत्तर बिहार में किसान आन्दोलन स्वामी विद्यानन्द के नेतृत्व में विकसित हुआ। इस क्षेत्र में दरभंगा के राजा के पास विस्तृत सम्पदा थी। उसने यहाँ के स्थानीय किसानों का विभिन्न प्रकार से दमन किया। स्वामी विद्यानन्द ने दरभंगा के राजा के विरुद्ध किसानों को संगठित किया। लेकिन यहाँ का आन्दोलन यू. पी. की भाँति जुझारू नहीं था।

बंगाल के किसानों ने भी ''कर न देने'' संबंधी आंदोलन में भाग लिया। मिदनापुर जिले में यह अधिक तीव्र था। किसानों ने यूनियन बोर्ड को 'कर देने' से इन्कार कर दिया। यह आंदोलन इतना प्रभावशाली था कि यूनियन बोर्ड के सदस्यों को त्यागपत्र देना पड़ा। सरकार ने यूनियन बोर्ड को समाप्त करने का निश्चय किया। इस प्रकार यह आन्दोलन सफल हुआ।

कांग्रेस ने गुजरात में किसानों को संगठित करने का प्रयत्न किया। 1927 में कपास के मूल्य में गिरावट आने के बावजूद सरकार ने बारदोली में राजस्व बढ़ा दिया। वल्लभ भाई पटेल और कनवर जी मेहता ने किसानों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस प्रकार 1928 में बारदोली सत्याग्रह आरंभ हुआ। किसानों ने सरकार को राजस्व देने से इन्कार कर दिया। इसके परिणामस्वरूप सरकार ने दमनकारी रुख अपनाया और किसानों की जमीनें जब्त कर लीं। अंत में सरकार को समझौता करना पड़ा और राजस्व की दर घटा दी गयी।

उपरोक्त आन्दोलनों के अतिरिक्त देश के अन्य भागों में भी छुटपुट विद्रोह हुए। राजस्थान, मालाबार, उड़ीसा, आसाम तथा अन्य प्रान्तों में भी किसानों ने अपने प्रति हुए अन्यायों का जोरदार विरोध किया।

17.9 1930 के दशक में किसान आन्दोलन

1930 के दशक में भी किसानों ने विभिन्न प्रांतों में विद्रोह किए। यू. पी. में किसान विद्रोह सबसे अधिक प्रभावशाली था। कांग्रेस ने 'कर न देने' संबंधी आंदोलन का आह्वान किया और जमींदारों से सरकार को राजस्व न देने के लिए कहा। परंतु कुछ नेता 'लगान बंदी' (No Rent) आंदोलन आरंभ करना चाहते थे। 'लगान बंदी' आंदोलन क्या है? यह उन काश्तकारों का आंदोलन है, जो जमींदारों को लगान देते थे, कर नहीं। कर-बंदी आंदोलन सरकार के विरुद्ध था जबकि लगान बंदी आंदोलन का प्रभाव जमींदारों पर पड़ा। 1931 में लगान बंदी आंदोलन आरंभ किया गया जिसका काश्तकारों ने जोरदार समर्थन किया। उन्होंने जमींदारों को लगान देना बंद कर दिया। आंदोलन रायबरेली, इटावा, कानपुर, उन्नाव और इलाहाबाद में फैल गया। रायबरेली के कालका प्रसाद जैसे नेताओं ने किसानों से सभी प्रकार की अदायगी रोक देने का अनुरोध किया। सरकार ने आंदोलन को दबाने का प्रयत्न किया। किसान यूनियन को अवैध घोषित कर दिया गया। आंदोलन कुचल दिया गया।

बंगाल और बिहार में किसानों ने कर-बंदी आंदोलन में भाग लिया। बंगाल में कृषक महिलाएं भी इस आंदोलन में शामिल हुई और उन्होंने मिदनापुर जिले में गैर-कानूनी नमक भी बनाया और बेचा। पुलिस द्वारा उनकी पिटाई की गयी। मानभूम, सिंहभूम और दिनाजपुर जिलों में आदिवासी किसानों ने नमक सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गए परंतु जमींदारों को लगान का भुगतान न करने का कोई आंदोलन नहीं हुआ था।

मद्रास प्रान्त में भी किसान आन्दोलन का विकास हो रहा था। 1928 में आन्ध्र रैयत एसोसिएशन बनायी गयी थी। इसके नेता प्रोफेसर एन. जी. रंगा थे। रैयत एसोसिएशन ने किसानों की तात्कालिक माँगों की तरफ ध्यान आकर्षित किया। इसकी महत्वपूर्ण माँगों में से एक माँग लगान में कमी थी। जिससे जमींदार प्रभावित हुए। जब सविनय अवज्ञा आंदोलन आरम्भ हुआ, उस समय किसानों ने गाँवों में सभाएँ आयोजित की और भू-राजस्व के विरुद्ध प्रचार किया। तंजौर, मदुरा और सेलम में विद्रोह तेज हुआ। 1931 के अंत तक कुछ जिलों में अनाज के लिए दंगे आरम्भ हो गए। कृष्णा जिले में एक महाजन के घर पर धावा बोला गया और उसका अन्न भंडार लूट लिया गया। गुन्टूर जिले में पुलिस और किसानों के बीच संघर्ष हुआ। सरकार और कांग्रेस द्वारा, किसान आन्दोलन को रोकने के प्रयासों के बावजूद भी यह और अधिक उत्साह के साथ बढ़ता रहा।

17.10 ऑल इंडिया किसान सभा की स्थापना

1920 तक विभिन्न क्षेत्रों में प्रान्तीय किसान सभाओं की स्थापना हो चुकी थी। परन्तु समाजवादियों और कम्युनिस्टों ने यह महसूस किया कि किसानों का एक केन्द्रीय संगठन होना आवश्यक है। उनके प्रयत्नों से 1936 में ऑल इंडिया किसान सभा की स्थापना हुई। 1937 तक ऑल इंडिया किसान सभा की शाखाएँ विभिन्न प्रान्तों में बन गई। एन.जी. रंगा, स्वामी सहजानंद, नरेन्द्र देव, इन्दुलाल याग्निक और बंकिम मुखर्जी ऑल इंडिया किसान सभा के कुछ प्रमुख नेता थे। किसान सभा के निम्नलिखित उद्देश्य थे :

- आर्थिक शोषण से किसानों की रक्षा,
- जमींदारी और ताल्लुकेदारी के रूप में भूस्वामित्व की समाप्ति,
- राजस्व और लगान में कमी,
- ऋण स्थगन,
- महाजनों को लाइसेंस देना (महाजनों के लिए कानून बनाना),
- खेतिहर मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी,
- व्यापारिक फसलों के लिए उचित मूल्य, और
- सिंचाई सुविधाएँ आदि।

सभाओं और प्रदर्शनों में किसान सभा इन माँगों से किसान को अवगत कराती थी और इन माँगों की स्वीकृति के लिए सरकार पर दबाव डालती थी। ऑल इंडिया किसान सभा ने फैजपुर में अपनी दूसरी वार्षिक सभा में प्रस्ताव रखा, ''देश की सारी साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियाँ खासकर किसान और मजदूर शोषकों के खिलाफ अपने संघर्ष को तेज करें। यह संघर्ष शोषण के प्रतिनिधि अंग्रेज सरकार, जमींदारों, भूमिपतियों, उद्योगपतियों और महाजनों के खिलाफ होगा।'' ऑल इंडिया किसान सभा ने कांग्रेस से अलग होकर संघर्ष करने का निर्णय लिया। उन्होंने दावा किया कि किसानों की मुक्ति उनके अपने संगठन के द्वारा ही हो सकती है।

किसान सभा ने एक नये तरीके का आंदोलन चलाया। यह मुख्यतः जमींदारों के विरुद्ध था। 1937-38 में बिहार में एक जन आंदोलन आरंभ हुआ। यह आंदोलन *बकाश्त* के नाम से विख्यात हुआ। *बकाश्त* का अर्थ है – स्वयं का जोता हुआ। प्रायः जमींदार *बकाश्त* भूमि से काश्तकार को बेदखल कर देते थे। 1937 में कांग्रेस मंत्रिमंडल के गठन के पश्चात् किसान सभा ने *बकाश्त* के मुद्दे को उठाया। *बकाश्त* आंदोलन के दौरान किसानों ने बेदखली के विरुद्ध संघर्ष किया। जमींदार और किसानों के बीच भी संघर्ष हुआ।

बंगाल में भी किसान सभा सक्रिय थी। बर्दवान जिले में दामोदर नहर के निर्माण के पश्चात् किसानों पर 'नहर कर' लगाया गया। किसान सभा ने 'नहर कर' में कमी के लिए सत्याग्रह किया। सरकार ने किसान सभा की कुछ माँगें स्वीकार कर लीं, अतः आंदोलन समाप्त कर दिया गया। उत्तर बंगाल के जिलों में *हाट-टोला आंदोलन* आरंभ किया गया। मेलों और हाटों में (साप्ताहिक बाजार) चावल, धान, सब्जी, पशु बेचने वाले किसानों से जमींदार वसूली (Levy) करते थे। किसानों ने इस वसूली का भुगतान करने से इंकार कर दिया। कभी-कभी जमींदार किसानों के साथ समझौता कर लेते थे और गरीब किसानों को लेवी के भुगतान से छूट दे देते थे।

1939 में बटाईदारों (Share Croppers) का आंदोलन हुआ। ये जमींदार की भूमि जोतने वाले गरीब किसान हुआ करते थे जो उत्पादन का कुछ भाग जमींदार को देते थे, फिर

भी पट्टेदारी की कोई सुरक्षा नहीं थी और जमींदार इन्हें बेदखल कर सकता था। 1939 में काश्तकार खेत से फसल अपने खलिहानों में ले गए। इससे पहले उन्हें फसल को जमींदार के अन्न-भंडार में ले जाना पड़ता था, जहाँ उसकी गहाई की जाती थी और तब बटाईदारों और जमींदारों के बीच बाँटा जाता था। उत्तर बंगाल के दीनाजपुर जिले में आंदोलन तेज था। सरकार ने किसानों से समझौता किया। यह निश्चित किया गया कि भविष्य में धान एक ऐसे स्थान पर इकट्ठा किया जाएगा जिसका निर्णय जमींदार और बटाईदार करेंगे। इस प्रकार आंदोलन सफल हुआ और किसान संगठन की क्षमता से अवगत हुए। इस काल में उड़ीसा और आन्ध्र प्रदेश में भी इसी प्रकार के संघर्ष हुए। आन्ध्र प्रदेश में किसानों को संगठित करने में एन. जी. रंगा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

17.11 कांग्रेस और किसान वर्ग

अब हमारे जहन में दो प्रश्न उठते हैं, वे इस प्रकार हैं – किसान आंदोलन के विषय में कांग्रेस की क्या प्रतिक्रिया थी? और कांग्रेस द्वारा निर्देशित राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में किसानों की क्या प्रतिक्रिया थी? कांग्रेस नेता किसानों की शक्ति से भलीभाँति परिचित थे और अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध संघर्ष में उनके महत्व को समझते थे। वे किसान की समस्याओं और तकलीफों से चिंतित थे। यह नेहरू की टिप्पणी से स्पष्ट हो जाता है, जो उन्होंने 1937 में की थी – ''भारत में सबसे महत्वपूर्ण समस्या किसानों की समस्या है। शेष सब गौण है'' परन्तु कांग्रेस के वे दक्षिणपंथी, जो भारतीय समाज के प्रभावशाली सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व करते थे, भारतीय किसान की बढ़ती हुई वर्ग चेतना और जमींदारी उन्मूलन के लिए किसान सभा की माँग से डरे हुए थे। वे चाहते थे कि किसान साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन को शक्तिशाली बनाने में सहयोग दें, परंतु जमींदारों के विरुद्ध किसानों की माँग के वे विरोधी थे। जब कभी किसानों ने जमींदारों के विरुद्ध संघर्ष किया, कांग्रेस नेता उन्हें रोकने का प्रयास करते थे। दक्षिणपंथियों ने किसान सभा की स्थापना को कांग्रेस संगठन के लिए एक चुनौती समझा। इसके विपरीत यदि हम किसान सभा और किसान आंदोलनों पर दृष्टि डालते हैं तब हमें ज्ञात होता है कि किसी भी स्तर पर किसान नेताओं ने कांग्रेस के विरुद्ध काम नहीं किया। कांग्रेस और देश की स्वतंत्रता के लिए उसकी भूमिका पर उन्हें पूरा विश्वास था। किन्तु कांग्रेस के दक्षिणपंथियों से भिन्न, किसान नेता केवल अंग्रेज शासन से ही नहीं बल्कि जमींदारों और पूँजीपतियों के आधिपत्य से भी मुक्ति की माँग करते थे। कांग्रेसी नेतृत्व और किसान नेतृत्व के बीच मतभेद का यही मुख्य कारण था। कांग्रेस के प्रति किसानों का दृष्टिकोण 4 अक्तूबर, 1939 में दिए गए सहजानंद के भाषण से स्पष्ट हो जाता है –

''हम सब कांग्रेस से उसके जादू या रहस्य के कारण नहीं बल्कि इसलिए जुड़े हैं कि वह राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। इसने संकटपूर्ण परिस्थितियों में गलत कदम नहीं उठाए ..... मुक्ति के लिए राष्ट्रीय संघर्ष की इस संकटपूर्ण परिस्थिति में संगत निर्णय लेने में हमारे सारे प्रयत्न इसके हाथ मजबूत करने के लिए हैं''।

बोध प्रश्न 5

1) यू. पी. (संयुक्त प्रांत) में किसान आंदोलन किस प्रकार आरंभ हुआ।

.....

.....

.....

.....

.....

2) ऑल इंडिया किसान सभा की प्रमुख माँगें क्या थी?

.....

.....

.....

.....

.....

3) अपना उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

i) कर-बंदी आंदोलन क्या है?

ii) 1928 के बारदोली सत्याग्रह का नेता कौन था?

iii) बकाश्त भूमि क्या है?

iv) *बटाईदार* (Share Croppers) कौन थे?

17.12 सारांश

भारत में श्रमिकों की दुःखद स्थिति ने ट्रेड यूनियन आंदोलन के विकास के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि तैयार की। परन्तु श्रमिकों की अशिक्षा, भाषा, जाति और सम्प्रदाय की भिन्नता और सबसे अधिक, मालिकों के ट्रेड यूनियन विरोधी दृष्टिकोण के कारण भारत में ट्रेड यूनियनों की स्थापना में विलम्ब हुआ।

इसके बावजूद 1920 के उपरांत ट्रेड यूनियन आंदोलन धीरे-धीरे मजबूत होने लगा। ''बाहरी व्यक्तियों'' ने ट्रेड यूनियनों के विकास में सहायता की। 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना एक प्रमुख घटना थी। यह ध्यान देने योग्य है कि कांग्रेसियों, कम्युनिस्टों, समाजवादियों और निर्दलीय श्रमिकों ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में मिलकर काम किया।

1937 के पश्चात् ट्रेड यूनियनवाद का विस्तार हुआ। कांग्रेस ने प्रान्तों में मंत्रिमंडल स्थापित किए। जिससे जनता में आशाएं जागीं। और श्रमिक, ट्रेड यूनियनों में शामिल हुए तथा हड़तालों में भाग लिया। कम्युनिस्टों और समाजवादियों ने इन हड़तालों में सक्रिय भूमिका निभायी।

टैक्स का अधिक भार, बेदखली का भय, भूमि पर दखल अधिकार (Occupancy Right) न होने, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि और इस अन्याय के प्रति सरकार के निष्क्रिय व्यवहार ने किसानों को विद्रोह के लिए बाध्य किया। 1920 और 1930 के दौरान भारत के विभिन्न राज्यों में अनेक किसान विद्रोह हुए। किसानों ने किसान सभाओं में अपने आपको संगठित किया और एक नये प्रकार का आंदोलन आरंभ किया। आंदोलन मुख्यतः जमींदारों के विरुद्ध थे। किसानों के केन्द्रीय संगठन के रूप में ऑल इंडिया किसान सभा की स्थापना की गयी। इस काल के किसान आंदोलनों का यह एक स्थायी प्रभाव था।

17.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) श्रमिक दयनीय स्थिति में रहते थे। उनके लिए अवकाश, रोजगार की सुरक्षा और वृद्धावस्था पेंशन की व्यवस्था नहीं थी। देखिए भाग 17.2

2) (क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) हाँ (ङ) नहीं (च) नहीं

बोध प्रश्न 2

1) ट्रेड यूनियन श्रमिकों का संगठन है। देखिए उपभाग 17.3.1

2) ट्रेड यूनियन ने श्रमिकों को शोषण के विरुद्ध एक साथ मिलकर काम करने का अवसर दिया। देखिए उपभाग 17.3.1

3) कुछ व्यक्तियों ने श्रमिकों की दुःखद स्थिति को देखते हुए उनकी दशा सुधारने के लिए उन्हें संगठित किया और शिक्षित किया। देखिए उपभाग 17.3.2

4) आरंभिक प्रयासों के फलस्वरूप धीरे-धीरे श्रमिकों के बीच ट्रेड यूनियन का विचार लोकप्रिय होने लगा और अन्त में श्रमिकों के केन्द्रीय संगठन के रूप में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की गयी। देखिए उपभाग 17.3.3

बोध प्रश्न 3

1) श्रमिकों की तकलीफों के कारण ट्रेड यूनियन आंदोलन श्रमिकों के बीच लोकप्रिय हुआ। बाहरी व्यक्तियों ने सभाएँ आयोजित करके, याचिकायें लिखकर और अपने अधिकारों के प्रति शिक्षित करके श्रमिकों की सहायता की। देखिए भाग 17.4

2) मूल्यों में वृद्धि, फैक्टरियों का बंद होना, श्रमिकों का निलम्बन आदि। देखिए भाग 17.5

3) देश की अर्थव्यवस्था में सुधार, ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में पुनः एकता स्थापित होना, प्रांतों में कांग्रेस मंत्रालयों की स्थापना आदि। देखिए भाग 17.6

बोध प्रश्न 4

1) किसानों को दखल अधिकार नहीं था। जमीन से बेदखली का भय, टैक्स का अधिक भार आदि। देखिए भाग 17.7

2) (i) ✓ (ii) ✗ (iii) ✗ (iv) ✗ (अ) ✗

बोध प्रश्न 5

1) आपके उत्तर में ताल्लुकेदारों का उत्पीड़न, किसानों को संगठित करने के लिए बाबा रामचन्द्र के प्रयास और आंदोलन की प्रगति आदि सम्मिलित होने चाहिए। देखिए भाग 17.8

2) आपके उत्तर में आर्थिक शोषण से किसानों की रक्षा, जमींदारी व्यवस्था का अंत, राजस्व और लगान में छूट आदि सम्मिलित होने चाहिए। देखिए भाग 17.10

3) (i) सरकार को लगान का भुगतान न करना।

(ii) वल्लभ भाई पटेल।

(iii) स्वयं जोती गयी भूमि।

(iv) गरीब किसान, जो बंटाई के आधार पर जमीन जोतते थे।